

हमारी नाव चली

हमारी नाव चली

डॉ० एस० पी० खत्री

लोक-शिक्षण-पुस्तक-माला, संख्या—२

प्रकाशक और विक्रेता

भारती-भण्डार

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

सं० २०[illegible]८ वि०

मूल्य ३.००

मुद्रक

चन्द्रप्रकाश ऐरन

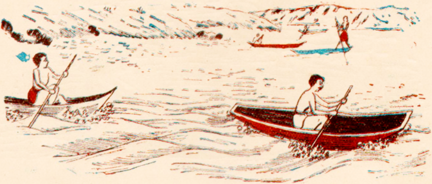
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

दो शब्द

बालकों के लिए पुराण, इतिहास आदि की कहानियों और लोक-कथाओं को लेकर हमारे यहाँ से अनेक विद्वानों की लिखी सुन्दर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इधर हमने लोक-शिक्षण-सम्बन्धी सुन्दर सचित्र पुस्तकें प्रकाशित करने का विचार किया है। उसी के अन्तर्गत डॉ० एस० पी० खत्री ने कुछ सुन्दर पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें हमारे जल, थल, आकाश और विश्व के आदिम विकास पर बहुत ही सरस पद्य-बद्ध पुस्तकें हैं। 'हमारी नाव चली' उन्हीं में से एक है। विश्वास है कि बालकों और प्रौढ़ों के लिए यह लोक-शिक्षण-माला बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

हमारी नाव चली



आओ भैया तुम्हें सुनायें,
सुन्दर एक कहानी।
मगर नहीं राजा रानी की,
पर है बहुत पुरानी।
छोटी छोटी नावें देखो,
हमको सैर करातीं,
पानी पर अठखेली करतीं,
सभी ओर ले जातीं।



मल्लाहों को अलग बिठाकर,
हाथ लिए पतवार,
धीरे-धीरे खेकर नैया,
हम ले जाते पार।



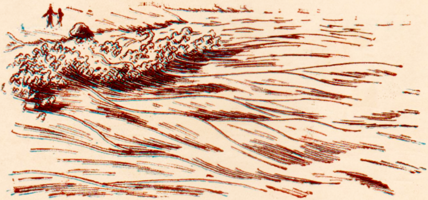
कुछ पुरखे थे बसे हमारे,
नदियों के ही तीर।
कन्द, मूल, फल खाकर जीते,
पीते निर्मल नीर।



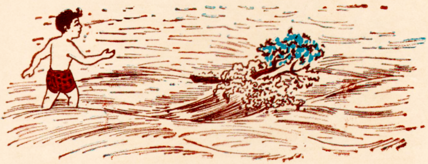
सोचो तो जब नाव नहीं थी,
तब हम क्या कर सकते?
लम्बी, लम्बी, गहरी नदियाँ,
कैसे पार उतरते?



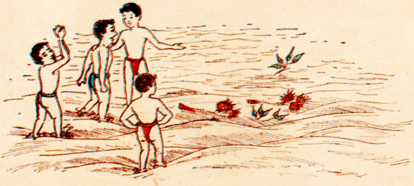
बालक खेला करते थे नित,
बैठे नदी किनारे।
तैर कभी कुछ पार उतरते,
कुछ रहते मन मारे।



हो जाती थीं छिछली नदियाँ,
आ सा नी से पा र।
बाढ़ मगर जब आ जाती थी,
जा ते हि म्म त हा र।



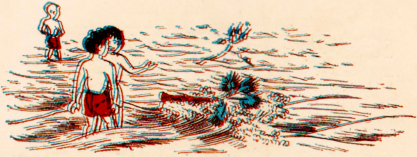
एक खिलाड़ी बालक आया,
लिए पेड़ की टहनी।
ज़ोर लगा पानी में फेंकी,
रही तैरती टहनी।



हुआ अचम्भा सबको बेहद,
टहनी ज़रा न डूबी।
इधर उधर मँडलाती जाती,
यह थी उसकी ख़ूबी।



लड़के सब हो गए इकट्ठे,
करने को खिलवाड़।
लगे फेंकने लम्बी शाखें,
पीपल हो या ताड़।



वे सब के सब रहे तैरते,
बड़े मौज में बहते।
लड़के उनको देख खुशी से,
आपे में क्या रहते ?



पानी पर क्या तैर सकेगी,
मो टी ल क ड़ी भा री ?
बड़े पेड़ का तना काटने
की त ब हु ई त या री ।



रहा तैरता बड़ी शान से,
बड़े पेड़ का लट्ठा।
उसके बाद गया तैराया,
बड़े तनों का गट्ठा।



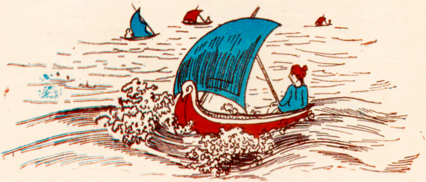
उस गट्ठे पर बैठे बालक,
ले पतवार चलाते।
और सभी होकर बेखटके,
नदी पार हो जाते।



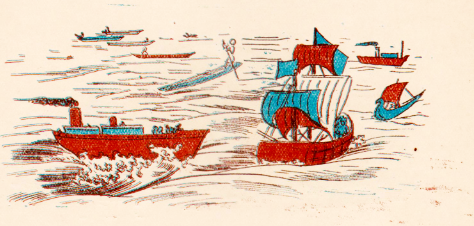
बड़े पेड़ के तने काट कर,
उन्हें खोखला करते।
और बनाकर छोटी नावें,
उन पर पार उतरते।



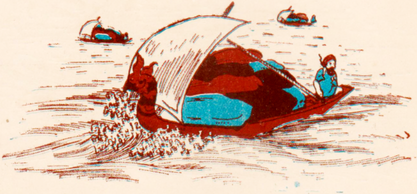
बनने लगीं तभी से नावें,
छो टी , ब ड़ी , ह मा री ।
पानी से क्यों कर डर लगता,
वि ज य हु ई थी भा री ।



छोटी और बड़ी नावों पर,
पा ल ल गा ए जा ते।
लेकर हवा गोद में अपनी,
दू र - दू र प हुँ चा ते।



बहुत दिनों तक पाल लगाकर,
हम थे नावें खेते।
दूर देश में जाते रहते,
खूब सैर कर लेते।



कभी लादकर माल निराला,
दूर - दूर ले जाते।
और वहाँ से सोना - चाँदी,
भर-भर कर ले आते।



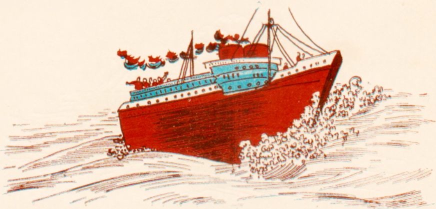
मगर समुद्रों में भय लगता,
आ ते ज ब तू फ़ा न।
डूबी, जाने कितनी नावें,
डू ब ग ए ब ल वा न।



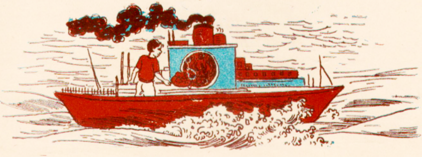
हिम्मत कभी न खोई हमने,
कभी नहीं घबड़ाये।
यही सोचते रहते हरदम,
सूझ नई कुछ आये।



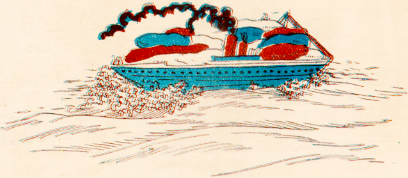
दूर देश के परदेशी ने,
इंजन एक बनाया।
जिससे सारी नौकाओं का,
पलट गई तब काया।



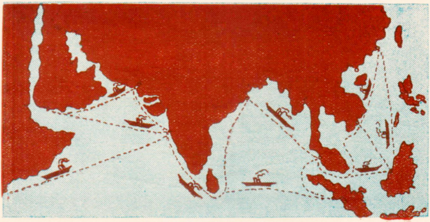
बलशाली था इतना इंजन,
कभी न वह था थकता।
बड़े जहाज़ों को था खेता,
हरदम चौकस रहता।



जला कोयला करता उसमें,
भाप इकट्ठी होती।
जिससे इंजन चलता रहता,
सैर दूर की होती।



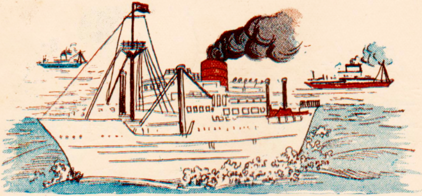
इन्हीं जहाज़ों ने ही देखो,
है व्यापार बढ़ाया।
इसी लिए तो देश-देश में,
सुख-वैभव है छाया।



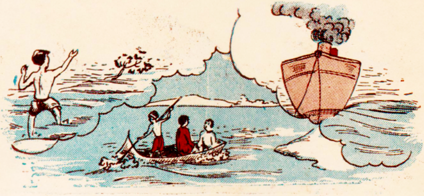
इन्हीं जहाज़ों पर ले आते,
दूर देश की चीज़ें।
इन्हीं जहाज़ों पर ले जाते,
अपने घर की चीज़ें।



देख लटकता हाथी ऊपर,
ब च्चों को म न भा या।
चिड़िया - घर में लाकर रक्खा,
म जा ब हु त ही आ या।



सागर हमने जीत लिया है,
छूट गया डर सारा।
चले चीरता उसकी छाती,
बड़ा जहाज़ हमारा।



अगर नहीं वह छोटा बालक,
ट ह नी को तै रा ता।
ब न तीं कै से ये नौ का एँ,
क्या ज हा ज ब न पा ता ?



हमारी नाव चली

डॉ० एस० पी० खत्री

लोक-शिक्षण-पुस्तक-माला, संख्या—२

प्रकाशक और विक्रेता

भारती-भण्डार

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

सं० २०[illegible]८ वि०

मूल्य ३.००

मुद्रक

चन्द्रप्रकाश ऐरन

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

दो शब्द

बालकों के लिए पुराण, इतिहास आदि की कहानियों और लोक-कथाओं को लेकर हमारे यहाँ से अनेक विद्वानों की लिखी सुन्दर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इधर हमने लोक-शिक्षण-सम्बन्धी सुन्दर सचित्र पुस्तकें प्रकाशित करने का विचार किया है। उसी के अन्तर्गत डॉ० एस० पी० खत्री ने कुछ सुन्दर पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें हमारे जल, थल, आकाश और विश्व के आदिम विकास पर बहुत ही सरस पद्य-बद्ध पुस्तकें हैं। 'हमारी नाव चली' उन्हीं में से एक है। विश्वास है कि बालकों और प्रौढ़ों के लिए यह लोक-शिक्षण-माला बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

हमारी नाव चली



आओ भैया तुम्हें सुनायें,
सुन्दर एक कहानी।
मगर नहीं राजा रानी की,
पर है बहुत पुरानी।
छोटी छोटी नावें देखो,
हमको सैर करातीं,
पानी पर अठखेली करतीं,
सभी ओर ले जातीं।



मल्लाहों को अलग बिठाकर,
हाथ लिए पतवार,
धीरे-धीरे खेकर नैया,
हम ले जाते पार।



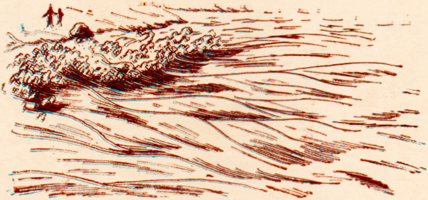
कुछ पुरखे थे बसे हमारे,
नदियों के ही तीर।
कन्द, मूल, फल खाकर जीते,
पीते निर्मल नीर।



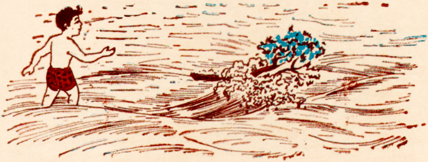
सोचो तो जब नाव नहीं थी,
तब हम क्या कर सकते?
लम्बी, लम्बी, गहरी नदियाँ,
कैसे पार उतरते?



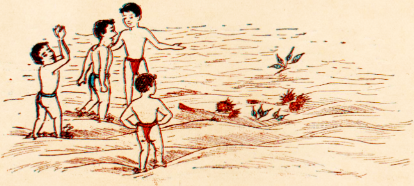
बालक खेला करते थे नित,
बैठे नदी किनारे।
तैर कभी कुछ पार उतरते,
कुछ रहते मन मारे।



हो जाती थीं छिछली नदियाँ,
आ सा नी से पा र।
बाढ़ मगर जब आ जाती थी,
जा ते हि म्म त हा र।



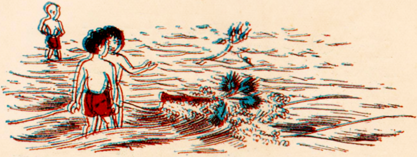
एक खिलाड़ी बालक आया,
लिए पेड़ की टहनी।
ज़ोर लगा पानी में फेंकी,
रही तैरती टहनी।



हुआ अचम्भा सबको बेहद,
टहनी ज़रा न डूबी।
इधर उधर मँडलाती जाती,
यह थी उसकी ख़ूबी।



लड़के सब हो गए इकट्ठे,
करने को खिलवाड़।
लगे फेंकने लम्बी शाखें,
पीपल हो या ताड़।



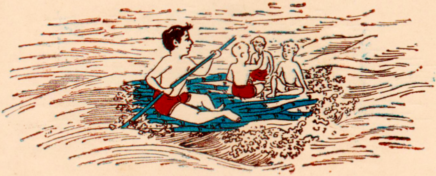
वे सब के सब रहे तैरते,
बड़े मौज में बहते।
लड़के उनको देख खुशी से,
आपे में क्या रहते ?



पानी पर क्या तैर सकेगी,
मो टी ल क ड़ी भा री ?
बड़े पेड़ का तना काटने
की त ब हु ई त या री ।



रहा तैरता बड़ी शान से,
बड़े पेड़ का लट्ठा।
उसके बाद गया तैराया,
बड़े तनों का गट्ठा।



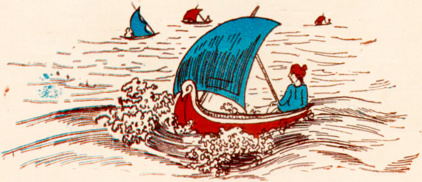
उस गट्ठे पर बैठे बालक,
ले पतवार चलाते।
और सभी होकर बेखटके,
नदी पार हो जाते।



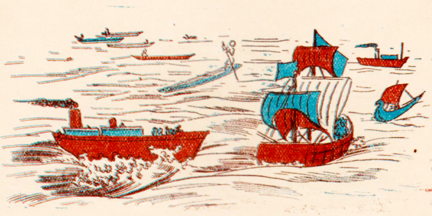
बड़े पेड़ के तने काट कर,
उन्हें खोखला करते।
और बनाकर छोटी नावें,
उन पर पार उतरते।



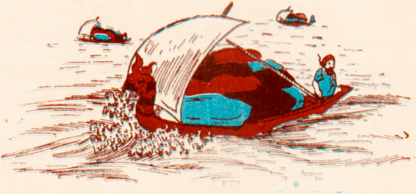
बनने लगीं तभी से नावें,
छोटी, बड़ी, हमारी।
पानी से क्यों कर डर लगता,
विजय हुई थी भारी।



छोटी और बड़ी नावों पर,
पा ल ल गा ए जा ते ।
लेकर हवा गोद में अपनी,
दू र - दू र प हुँ चा ते ।



बहुत दिनों तक पाल लगाकर,
हम थे नावें खेते।
दूर देश में जाते रहते,
खूब सैर कर लेते।



कभी लादकर माल निराला,
दूर - दूर ले जाते।
और वहाँ से सोना - चाँदी,
भर-भर कर ले आते।



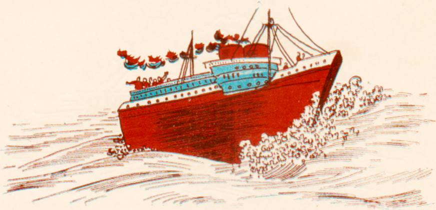
मगर समुद्रों में भय लगता,
आते जब तूफ़ान।
डूबीं, जाने कितनी नावें,
डूब गए बलवान।



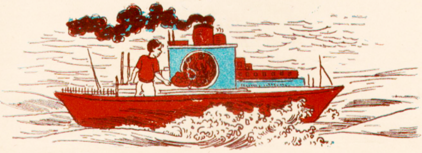
हिम्मत कभी न खोई हमने,
कभी नहीं घबड़ाये।
यही सोचते रहते हरदम,
सूझ नई कुछ आये।



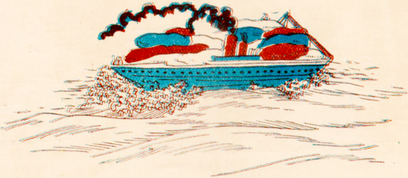
दूर देश के परदेशी ने,
इंजन एक बनाया।
जिससे सारी नौकाओं का,
पलट गई तबकाया।



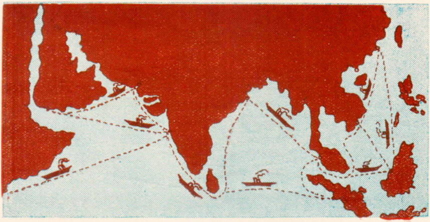
बलशाली था इतना इंजन,
कभी न वह था थकता।
बड़े जहाज़ों को था खेता,
हरदम चौकस रहता।



जला कोयला करता उसमें,
भाप इकट्ठी होती।
जिससे इंजन चलता रहता,
सैर दूर की होती।



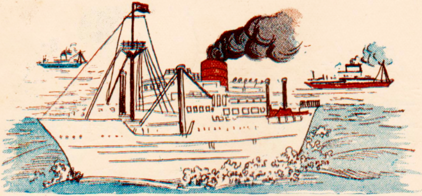
इन्हीं जहाज़ों ने ही देखो,
है व्यापार बढ़ाया।
इसी लिए तो देश-देश में,
सुख-वैभव है छाया।



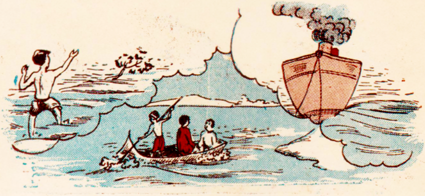
इन्हीं जहाज़ों पर ले आते,
दूर देश की चीज़ें।
इन्हीं जहाज़ों पर ले जाते,
अपने घर की चीज़ें।



देख लटकता हाथी ऊपर,
बच्चों को मन भाया।
चिड़िया - घर में लाकर रक्खा,
मजा बहुत ही आया।



सागर हमने जीत लिया है,
छूट गया डर सारा।
चले चीरता उसकी छाती,
बड़ा जहाज़ हमारा।



अगर नहीं वह छोटा बालक,
टहनी को तैराता।
बनतीं कैसे ये नौकाएँ,
क्या जहाज बन पाता?

